

अक्टूबर-दिसम्बर-२०१६

भूमिजा

त्रैमासिक कृषि सूचना-पत्र



कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया सीतापुर
उत्तर प्रदेश



भूमिजा

त्रैमासिक कृषि सूचना-पत्र



कृषि विज्ञान केन्द्र-II, ग्राम-कटिया, पोस्ट-उलरा (मानपुर), जनपद-सीतापुर (उ.प्र.)

वर्ष-७

अक्टूबर-दिसम्बर २०१६

प्रधान संरक्षक

डॉ० संजय सिंह

संरक्षिका

डॉ० अमीता सिंह

परामर्श मंडल

डॉ० अतर सिंह

(निदेशक, भा.कृ.अनुप-अटारी, जोन-३, कानपुर)

डॉ० शांतनु कुमार दूबे

(प्रधान वैज्ञानिक, भा.कृ.अनुप-अटारी, जोन-३, कानपुर)

डॉ० संजय अरोरा

(प्रधान वैज्ञानिक भा.कृ.अनुप- केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ)

डॉ० राम दत्ता

(प्रधान वैज्ञानिक भा.कृ.अनुप-मूंगफली अनुसंधान निदेशालय जूनागढ़ गुजरात)

प्रधान संपादक एवं प्रकाशक

डॉ० आनंद सिंह

संपादक

श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह

सह-संपादक

श्री सचिन प्रताप तोमर

संपादक मण्डल

डॉ० आनंद सिंह (द्वितीय)

डॉ० दया शंकर श्रीवास्तव

डॉ० (श्रीमती) सौरभ

डॉ० शिशिर कांत सिंह

डॉ० योगेंद्र प्रताप सिंह

लेआउट डिजाइन

श्री शिवराज सिंह

श्री संदीप कुमार यादव



संदेश

भारत में प्राचीन काल से ही वैज्ञानिक चिन्तन विकास एवं प्रयोग की परम्परा रही है देश के कृषि, मत्स्य विकास एवं पशुपालन में विज्ञान एवं प्रद्योगिकी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। अब प्रयास यह होना चाहिए कि यह तकनीकियां बहुत ही सरल एवं लोकप्रिय भाषा में जनमानस तक पहुंचायी जाये। मुझे खुशी है कि इस क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र-II कटिया, सीतापुर नवीनतम कृषि अनुसंधानों एवं तकनीकियों को जनपद के किसानों तक पहुंचाने में निरन्तर तत्पर है, ताकि जनपद के कृषक उसका भरपूर लाभ उठा सके और अपने सामाजिक-आर्थिक जीवन स्तर में सुधार ला सकें। "त्रैमासिक कृषि सूचना-पत्र" को तैयार करने में जुड़े सभी कार्मिकों का प्रयास सराहनीय है। ऐसा मेरा विश्वास है कि यह प्रयास कृषकों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं के लिए ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ० संजय सिंह



संदेश

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हुआ है कि कृषि विज्ञान केन्द्र-II कटिया, सीतापुर की टीम द्वारा तकनीकों एवं केन्द्र की गतिविधियों के प्रसार हेतु, भूमिजा त्रैमासिक पत्रिका का सतत प्रकाशन किया जा रहा है। जनपद सीतापुर में कृषि बहुत ही महत्वपूर्ण उद्योग एवं लाखों कृषकों के जीवनयापन का माध्यम है। वर्तमान परिवेश में कृषि को लाभप्रद व्यवसाय बनाने एवं युवाओं को कृषि से जोड़ने के लिए कृषि में तकनीकों का प्रयोग अति आवश्यक है। पुनः मुझे बहुत खुशी हो रही है कि परिषद् के मार्गदर्शन में केन्द्र कृषकों के मध्य अपनी सशक्त पहचान बना रहा है। मैं सभी कृषकों महिलाओं एवं संगठनों से यह आवाहन करती हूँ कि वह केन्द्र से ज्यादा से ज्यादा लाभ प्राप्त करें।

डॉ० अमीता सिंह
पूर्व मंत्री
उत्तर प्रदेश शासन

शुभकामनाओं सहित,

डॉ० अमीता सिंह

संपर्क सूत्र

डॉ० आनंद सिंह

वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, ग्राम-कटिया,
पोस्ट-उलरा (मानपुर), जनपद-सीतापुर
(उ.प्र.) फोन-०५८६३-२११०३५

ईमेल- sitapurkvk2@gmail.com

greenkvksitapur@yahoo.com

Website: <http://sitapur2.kvk4.in>



डॉ आनंद सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष
कृषि विज्ञान केन्द्र-II, ग्राम-कटिया,
जनपद-सीतापुर (उ.प्र.)

प्रधान संपादक की कलम से



देश में द्रुत गति से हो रहे शहरीकरण तथा औद्योगीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि में कमी आना स्वाभाविक है। ऐसे में निरंतर घटती कृषि भूमि से देश कि बढ़ती हुई आबादी के लिए आहार जुटा पाना निश्चित तौर पर आने वाले समय में एक बड़ी चुनौती के रूप में हमारे समक्ष आने वाली है। सघन खेती, समेकित कृषि, अधिक उपज देने वाली किस्मों का विकास आदि कार्यकलापों पर पुरजोर बल देते हुए कृषकों को इन्हे अपनाने हेतु जागरूक करने के प्रयास कृषि विस्तार कर्मियों द्वारा निरंतर किये जा रहे हैं और उन्हें अपनाने के लिए हरसंभव सहायता भी प्रदान की जा रही है। लेकिन इस वास्तविकता से मुँह नहीं मोड़ा जा सकता कि अभी इस दिशा में काफी कुछ किया जाना शेष है।

कृषि और किसानों के आर्थिक तथा सामाजिक उत्थान के लिए आवश्यक है कि खेती-किसानी की विज्ञान सम्मत समसामयिक जानकारीयें खेत किसान तक उनकी अपनी मातृ भाषा में पहुंचाई जाएं। जब हम खेत खलिहान की बात करते हैं तो हमें खेत की तैयारी से लेकर पौध संरक्षण, फसल की कटाई-गहाई और उपज भण्डारण तक की तमाम सूचनाओं से किसानों को अवगत कराना चाहिए। कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने के लिए आवश्यक है कि समयबद्ध कार्यक्रम तथा नियोजित योजना के तहत खेती किसानों के कार्य संपन्न किए जाए।

उपलब्ध भूमि एवं जलवायु तथा संसाधनों के अनुसार फसलों एवं उनकी प्रमाणित किस्मों का चयन, सही समय पर उपयुक्त विधि से बुवाई, मृदा परीक्षण के आधार पर संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, फसल की क्रांतिक अवस्थाओं पर सिंचाई, पौध संरक्षण के आवश्यक उपाय के अलावा समय पर कटाई, गहाई और उपज का सुरक्षित भण्डारण तथा विपणन बेहद जरूरी है। कृषि उपज एवं उत्पादों को लाभकारी मूल्य मिल सके इस हेतु स्वयं सहायता समूह एवं एफ पी ओ से कृषकों को जुड़ना होगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया द्वारा विगत कुछ वर्षों से कम समय में अधिक लाभ देने वाली फसलों, कृषि आधारित उद्यमिता विकास, जैविक कृषि, डेयरी फार्मिंग, सघन उद्यानिकी, औषधीय व सगंध पौधों आदि पर कार्य किया जा रहा है। साथ ही साथ केन्द्र द्वारा कृषि व ग्रामीण विकास के लिए निम्नलिखित परियोजनाएं चलायी जा रही हैं...

१-बायोटेक किसान हब २-नारी-पोषण संवेदी कृषि संसाधन एवं नवोन्मेषण ३-सीतापुर व निकटवर्ती जनपदों में मूंगफली विकास कार्यक्रम ४-ग्रामीण महिला तकनीकी पार्क ५-कृषि में महिलाओं के श्रम को कम कर कार्य क्षमता का विकास ६-चारा तकनीकी प्रदर्शन पर राष्ट्रीय पहल ७-लखनऊ जनपद में कृषि-हॉर्टी हस्तक्षेप और भूमि उपयोग योजना के माध्यम से किसानों की आय में वृद्धि ८- सीतापुर जनपद में सहजन की खेती, बकरी तथा मधुमक्खी पालन के एकीकृत मॉडल के माध्यम से पर्यावरण हितैषी एवं टिकाऊ दृष्टिकोण के साथ किसानों की आय को बढ़ाना।

पुनः सभी कृषक भाइयों, महिलाओं, युवाओं, उद्यमियों कृषि वैज्ञानिकों एवं सभी प्रसार कार्यकर्ताओं को नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें।

आनंद सिंह

प्रशिक्षण

| शीर्षक | प्रशिक्षण सं० | लाभान्वित किसान |
|--------------------------------------|---------------|-----------------|
| कृषक एवं कृषक महिलाओं हेतु प्रशिक्षण | 35 | 491 |
| व्यवसायिक प्रशिक्षण | 01 | 21 |
| प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु प्रशिक्षण | 01 | 18 |

अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

| शीर्षक | क्षेत्रफल हे० | लाभान्वित किसान |
|--|---------------|-----------------|
| मसूर फसल (JRF 2) में बीज शोधन व लाइन से बुवाई | 03 | 10 |
| पीली सरसों फसल (NRCYS-02) में बीज शोधन व लाइन से बुवाई | 03 | 15 |
| चना फसल (पन्त चना 186) में बीज शोधन व लाइन से बुवाई | 03 | 15 |
| गेहूं फसल (उन्नत हलना) में बीज शोधन व लाइन से बुवाई | 06 | 15 |
| गेहूं फसल में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन | 05 | 10 |
| मसूर फसल में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन | 05 | 10 |
| आलू फसल में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन | 03 | 10 |
| परवल में सूत्रकृमि प्रबंधन | 03 | 10 |
| पोषण वाटिका में मौसमी सब्जियां व नर्सरी उत्पादन | 0.125 | 05 |
| बरसीम फसल (BL 40) चारा उत्पादन प्रदर्शन | 01 | 10 |
| मोटे अनाजों का मूल्य सम्वर्धन | 0.4 | 05 |

प्रक्षेत्र पर परीक्षण

| शीर्षक | संख्या | लाभान्वित किसान |
|--|--------|-----------------|
| समय से बुवाई हेतु गेहूं की प्रजातियों का मूल्यांकन | 05 | 05 |
| संकर प्रजाति की गायों में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी | 05 | 05 |
| UMMB के द्वारा दुग्ध उत्पादन बढ़ोत्तरी का मूल्यांकन | 05 | 05 |
| मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन व उत्पादन में वृद्धि हेतु मसूर में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन | 05 | 05 |
| परिवार की खाद्य सुरक्षा एवं कृषक आय को दोगुना करने में किनोवा फसल का मूल्यांकन | 05 | 05 |
| मूंगफली दुग्ध उत्पादन द्वारा परिवार की खाद्य सुरक्षा का मूल्यांकन | 05 | 05 |

प्रसार कार्यक्रम

| शीर्षक | संख्या | लाभार्थी |
|---|--------|----------|
| कृषक प्रक्षेत्र पर वैज्ञानिकों का भ्रमण | 42 | 192 |
| कृषक प्रक्षेत्र पर वैज्ञानिकों का नैदानिक भ्रमण | 23 | 28 |
| कृषकों का कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण | 198 | 198 |
| बीज एवं मृदा उपचार कार्यक्रम | 08 | 135 |
| मृदा स्वास्थ्य कैम्प | 06 | 187 |
| पशु स्वास्थ्य कैम्प | 02 | 34 |
| न्यूज पेपर कवरेज | 21 | — |
| प्रक्षेत्र दिवस | 03 | 87 |
| मृदा नमूना परीक्षण | 451 | 451 |
| मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण | 435 | 435 |
| आकाशवाणी / टेलीविजन प्रसारण | — | — |
| प्रकाशित लेख | — | — |
| मोबाइल संदेश | 03 | 75825 |
| स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम | 15 | 324 |
| निदान / उपचार सेवाएं | 13 | 17 |

रोपण सामग्री

| | |
|------------------|------|
| नेपियर जड़ वितरण | 2500 |
| सब्जी पौध वितरण | 1300 |
| अण्डा उत्पादन | 765 |

कृषि विज्ञान केंद्र-II, कटिया, सीतापुर ने मनाया संविधान दिवस

| कार्यक्रम | स्थान का नाम | प्रतिभागियों की संख्या | दिनांक |
|--|--|------------------------|------------|
| भारतीय संविधान पर मुख्य वक्ताओं का उद्बोधन | स्वामी विवेकानंद इण्टरमीडिएट कॉलेज बलदेवनगर मानपुर सीतापुर | 876 | 26-11-2019 |
| प्रस्तावना पढ़ना | स्वामी विवेकानंद इण्टरमीडिएट कॉलेज बलदेवनगर मानपुर सीतापुर | 876 | 26-11-2019 |

26 नवंबर को संविधान दिवस का आयोजन कृषि विज्ञान केंद्र-II कटिया, सीतापुर ने मानपुर स्थित स्वामी विवेकानंद इण्टरमीडिएट कॉलेज, बलदेवनगर के साथ मिलकर मनाया संविधान की महत्वा पर प्रकाश डालते हुए केन्द्र के अध्यक्ष डॉ आनंद सिंह ने कहा कि संविधान दिवस हर साल 26 नवंबर को मनाया जाता है, जिस दिन भारत के संविधान मसौदे को अपनाया गया था। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू होने से पहले 26 नवंबर 1949 को इसे अपनाया गया।



चित्र-01 डा0 आनन्द सिंह, छात्रों को समबोधित करते हुए

संविधान सभा के सदस्यों का पहला सेशन 9 दिसंबर 1947 को आयोजित हुआ। इसमें संविधान सभा के 207 सदस्य थे चूंकि संविधान की ड्राफ्टिंग कमेटी के अध्यक्ष डॉ बी0 आर0 अंबेडकर थे इसीलिए उनकी जयंती पर संविधान दिवस मनाये जाने का निर्णय लिया गया इन्हें भारत के संविधान का निर्माता भी कहा जाता है। कॉलेज के प्राचार्य श्री शिव सागर शर्मा जी ने स्कूल के बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा की भारत के संविधान निर्माता डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने भारतीय संविधान के रूप में दुनिया का सबसे बड़ा संविधान तैयार किया है। यह दुनिया के सभी संविधानों को परखने के बाद बनाया गया। इसे विश्व का सबसे बड़ा संविधान माना जाता है, जिसमें 448 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियां और 94 संशोधन शामिल हैं। यह हस्तलिखित संविधान है जिसमें 48 आर्टिकल हैं। इसे तैयार करने में 2 साल 11 महीने और 17 दिन का वक्त लगा था। पादप रक्षा

वैज्ञानिक डॉ दया शंकर श्रीवास्तव ने कहा की इस दिन स्कूलों में बच्चों को संविधान की प्रस्तावना एवं मौलिक कर्तव्यों की जानकारी दी जाती है। संविधान दिवस मनाने का मकसद नागरिकों को संविधान के प्रति सचेत करना, समाज में संविधान के महत्व का प्रसार करना है। केन्द्र के प्रसार वैज्ञानिक शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि संविधान दिवस पर हमें अपने अंदर ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करने की आवश्यकता है ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियों को हमारे देश के संविधान के महत्व को समझ सके, जिससे की वह इसका सम्मान तथा पालन करें। इसके साथ ही यह हमें वर्तमान से जोड़ने का कार्य करता है, जब लोग जनतंत्र का महत्व दिन-प्रतिदिन भूलते जा रहे हैं तब यही वह तरीका है जिसे अपनाकर हम अपने देश के संविधान निर्माताओं को सच्ची श्रद्धांजली प्रदान कर सकते हैं और लोगो में उनके विचारों का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं।



चित्र 02 डा0 सौरभ द्वारा संविधान की प्रस्तावना पढ़ी गई कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की गृह वैज्ञानिका डा0 श्रीमती सौरभ के द्वारा संविधान की प्रस्तावना पढ़ी गयी। कार्यक्रम में विवेकानंद इण्टर कॉलेज के श्री अशुद्दीन खान, अरविन्द कुमार पटेल, राम नरेश श्रीवास्तव, देशराज यादव, माधव चरण मिश्रा, राम दस यादव, हरी प्रसाद मौर्या, ज्ञानेंद्र सिंह यादव, नरेंद्र कुमार मिश्रा, सुशीला देवी, माया देवी, अतुल कुमार सिंह, राजकरण, गंगाराम, राजाराम, शहाना खातून, अंजुम प्रवीन व रोहित वर्मा सहित कुल ८७६ छात्रों ने प्रतिभाग किया।

उर्वरक उपयोग जगरूकता कार्यक्रम

सी0 सुब्रमणियम सभागार, एन0ए0एस0सी0 परिसर, पूसा नई दिल्ली में उर्वरकों के सही उपयोग सम्बन्धी राष्ट्रीय जागरूकता कार्यक्रम का उद्घाटन मा0 केन्द्रीय कृषि मंत्री द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम का सजीव प्रसारण कृषि विज्ञान केन्द्र-II कटिया, सीतापुर के प्रशिक्षण सभागार में किया गया तथा इस अवसर पर उपस्थित कृषकों व युवाओं को वैज्ञानिकों द्वारा उर्वरक उपयोग सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर तकनीकी जानकारी प्रदान की गई तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा बनायी गई फिल्म को दिखाया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए केन्द्र के अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 आनन्द सिंह ने बताया कि उर्वरकों का सही समय व सही तरीके से उपयोग निश्चित ही इसकी उपयोग क्षमता बढ़ाता है। परिस्थिति अनुसार व फसल अनुसार उर्वरक देने से उपज में भारी वृद्धि होती है।



श्री शिव चन्द्र शुक्ला, उपक्षेत्र प्रबंधक, इफको, सीतापुर ने कृषकों को तरल जैव उर्वरक व धीमी गति से जारी उर्वरकों की जानकारी देते हुए बताया कि इन उर्वरकों के उपयोग से अधिकतम उत्पादन लिया जा सकता है व कृषि लागत को कम किया जा सकता है। एस0डी0ओ0, सदर, अख्तर हुसैन, कृषि विभाग, सीतापुर ने बताया कि संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन की बात की जाए, तो मिट्टी की सेहत को बनाए रखने और भरपूर पैदावार के लिए सभी पोषक तत्वों के स्रोतों जैसे रासायनिक उर्वरकों और खादों (हरी खाद, कंपोस्ट, गोबर की खाद व जैव उर्वरक वगैरह) का सही इस्तेमाल होना चाहिए। मृदा वैज्ञानिक श्री सचिन प्रताप तोमर ने बताया कि फसलों के उत्पादन को बढ़ाने में उर्वरकों का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण योगदान है, परन्तु उर्वरक के उपयोग का पूरा लाभ तभी मिल सकता है जब मिट्टी जाँच के आधार पर संतुलित उर्वरक के प्रयोग पर ध्यान दिया जाये। मिट्टी की उर्वरता के लिए ह्यूमस महत्वपूर्ण है। उस पर विशेष ध्यान देने से ही उर्वरता बढ़ सकती है। पौधों अथवा मिट्टी के विश्लेषण से मिट्टी में पोषक

तत्वों के अभाव का पता लगता है किंतु केवल मिट्टी के विश्लेषण से पोषक तत्वों की कमी का पता नहीं लगता।



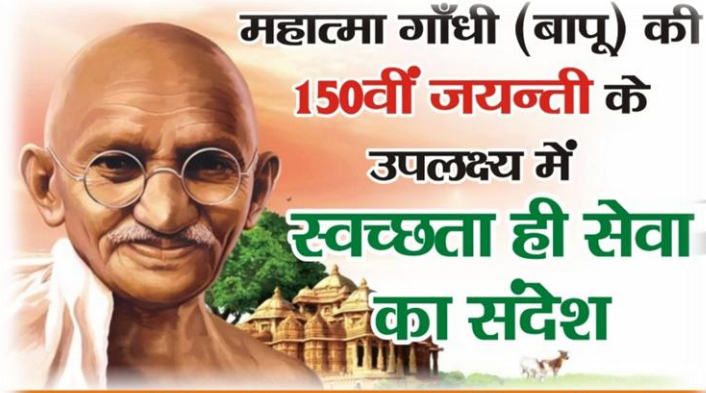
पशुपालन वैज्ञानिक डा0 आनन्द सिंह ने कहा कि पशुओं के गोबर को सड़ा गलाकर डालना चाहिए। ऐसी खाद पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करने के साथ-साथ मिट्टी की दशा भी सुधारती है और मिट्टी में पानी को रोक रखने की क्षमता बढ़ाती है। गोबर को घासपात के साथ मिलाकर कम्पोस्ट तैयार करके प्रयुक्त करना अच्छा होता है।

सस्य विज्ञान वैज्ञानिक डा0 शिशिर कान्त सिंह ने बताया कि फसल प्रणाली में दलहनी फसलों के समायोजन से मिट्टी की उर्वरता को बनाये रखा जा सकता है तथा पैदावार बढ़ाने के लिए किसानों को रबी दलहनी फसलों के लिए सही प्रबंधन करना चाहिए, इस प्रबंधन में सबसे जरूरी है संतुलित उर्वरकों का इस्तेमाल। संतुलित उर्वरकों से न केवल पैदावार बढ़ाई जा सकती है, बल्कि खेती की लागत भी घटाई जा सकती है।

प्रसार वैज्ञानिक श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह ने बताया कि गोबर की खाद का जैविक उर्वरकों के साथ इस्तेमाल करने से मिट्टी का गठन, पानी सोखने की क्षमता, बनावट और हवा संचार क्षमता में सुधार होता है। इस से मिट्टी में सूक्ष्म जीवाणुओं की क्रियाशीलता भी बढ़ती है।

फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डा0 दया शंकर श्रीवास्तव ने बताया कि रासायनिक उर्वरकों एवं पीड़कनाशियों के अनुचित व असंतुलित मात्रा में बिना सूझ-बूझ के प्रयोग में कमी लाने की आवश्यकता है अन्यथा मृदा में उपस्थित लाभकारी जीवाणु और सूक्ष्मजीव विलुप्त हो जाएंगे और इनकी उपस्थिति में मृदा में होने वाली विभिन्न अपघटन तथा विघटन इत्यादि क्रियाओं पर प्रतिकूल असर पड़ेगा जिससे पोषक तत्वों एवं खनिज लवणों का बहुत बड़ा हिस्सा पौधों को प्राप्त नहीं हो सकेगा। इस अवसर पर कार्यक्रम में 345 कृषकों व युवाओं ने प्रतिभागिता की तथा कृषकों को के0वी0के0 प्रक्षेत्र में भ्रमण द्वारा विभिन्न इकाईओं की जानकारी दी गई।

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत कृषि विज्ञान केन्द्र-II कटिया, सीतापुर ने चलाया सफाई और पौधा रोपण अभियान



आयोजक- कृषि विज्ञान केन्द्र-II कटिया एवं कृषि विभाग, सीतापुर (उ.प्र.)

राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के मौके पर कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर ने स्वच्छता से जुड़े निम्नानुसार कार्यक्रम का आयोजन किया।

- ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ केन्द्र के परिसर में वृक्षारोपण
- इमारती व फलदार पौधों का वितरण
- स्कूल के बच्चों के साथ गाजर घास उन्मूलन कार्यक्रम
- मृदा व जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम
- स्वच्छता शपथ

इस मौके पर कार्यक्रम में उप-निदेशक कृषि, सीतापुर, भूमि संरक्षण अधिकारी, जिला उद्यान अधिकारी, निदेशक मत्स्य व मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी मौजूद रहे।

राष्ट्रपिता के विचारों पर प्रकाश डालते हुए केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक व अध्यक्ष डा० आनंद सिंह ने लोगों को स्वच्छता ही सेवा का शपथ दिलाया. उन्होंने कहा कि आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि एक बार उपयोग में लाये जाने वाले प्लास्टिक हम घर में नहीं लायेंगे, न ही लाने देंगे. आसपास के लोगों को भी ऐसा करने का सुझाव देंगे।



चित्र न १ स्वच्छता शपथ दिलाते हुए

उप-निदेशक कृषि श्री अरविन्द मोहन मिश्रा ने पराली जलाने से होने वाले नुकसान पर दुःख जताते हुए कहा कि किसानों द्वारा पराली जलाने से भूमि की उपजाऊ क्षमता लगातार घट रही है इस कारण भूमि में 80 प्रतिशत तक नाइट्रोजन, सल्फर तथा 20 प्रतिशत तक अन्य पोषक तत्वों में कमी आई है मित्र कीट नष्ट होने से शत्रु कीटों का प्रकोप बढ़ा है, जिससे फसलों में विभिन्न प्रकार की नई बीमारियां उत्पन्न हो रही हैं मिट्टी की ऊपरी परत कड़ी होने से जल धारण क्षमता में कमी आ रही है।



चित्र नं २ राष्ट्रपिता के विचारों पर प्रकाश डालते हुए

भूमि संरक्षण अधिकारी जल प्रदूषण व पीने योग्य पानी की कमी पर लोगों को जागरूक करते हुए कहा कि हमें अपने जीवन में जल के महत्व को समझते हुए और जल के उपयोग के उचित प्रबंधन के द्वारा इसके दुरुपयोग को रोकना होगा। साथ ही, साफ जल को मिट्टी या जल प्रदूषण द्वारा गंदा होने से बचाने की भी नितांत आवश्यकता है। खास तौर पर हमें शौचालय में साफ जल के बजाए बारिश के जल को जमा करके उसका इस्तेमाल करना चाहिए।



चित्र न ३ मृदा नमी सूचक का प्रयोग करते हुए

मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी ने बताया की राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का डेयरी व पशुपालन के प्रति बहुत गहरा लगाव था और उन्होंने बंगलुरु के तत्कालीन इम्पीरियल डेयरी इंस्टिट्यूट में वैज्ञानिक ढंग से पशुपालन का प्रशिक्षण भी लिया था तथा साबरमती आश्रम में डेयरी फार्म की स्थापना भी की थी।



चित्र न ४ सिंगल यूज प्लास्टिक पर सरकारी निर्णय के बारे में अवगत कराते हुए

जिला उद्यान अधिकारी ने लोगो को किचन गार्डन के प्रति जागरूक किया तथा सभी से अपनी उगाई हुए सब्जी खाने का आग्रह किया साथ ही साथ उद्यानिकी में रसायन का प्रयोग न करने की सलाह दी।



चित्र न 6 श्री राम चंपा देवी सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कॉलेज बिसवां सीतापुर के बच्चों को गाजर घास से उत्पन्न हुई समस्याओं और इसके प्रति अपनाई जाने वाली सावधानियों से अवगत कराते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष डॉ० आनंद सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा केन्द्र के परिसर में वृहद वृक्षारोपण अभियान एवं कृषक संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया

दिनांक -17 सितम्बर 2019

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा केन्द्र के परिसर में वृहद वृक्षारोपण अभियान एवं कृषक संगोष्ठी कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कृषकों को वृक्षारोपण हेतु प्रोत्साहित करना इस क्रम में कृषकों को वृक्ष के महत्व के बारे में बताया गया साथ ही 375 कृषकों को 4-5 पौधों वितरित किए गये।



चित्र न-9 कृषक संगोष्ठी की एक झलक कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर के परिसर में फलदार एवं वानिकी के 35 पौधों का रोपण किया गया। कार्यक्रम में केन्द्र के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डा० आनंद सिंह ने वृक्षों के महत्व को बताते हुए कहा कि किसान भाई मालाबार नीम का खेती करके अधिक से अधिक नगदी कमा सकते हैं, जो ढाई वर्ष में लगभग 40 फीट की ऊंचाई ले लेता है तथा सिंचित अवस्था में इसे 5 वर्ष में काटा जा सकता है मालाबार नीम को कम सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है तथा यह अधिक मूल्य देकर जाती है और किसान भाई इसे अपने खेत के मेंडों पर, बगीचों में या ऐसी भूमि पर जिस पर वह खेती नहीं कर रहे हैं लगाकर अधिक से अधिक धन कमा सकते हैं।

मुख्य अतिथि उप-निदेशक कृषि सीतापुर श्री अरविंद मोहन मिश्रा ने वृक्षों के महत्व को बताते हुए कहा कि विगत वर्षों से जिस तरह से हम वृक्षों का कटान कर रहे हैं इससे वर्षा पर असर पड़ा है और कम जल या कम वर्षा के कारण खेती प्रभावित हुई है अतः कृषक भाइयों को अधिक से अधिक

संख्या में वृक्षारोपण करके अपने पर्यावरण को बचाना होगा और साथ में जल के सदुपयोग पर भी ध्यान देना होगा जिससे जो असंतुलन पैदा हो रहा है उसे हम ठीक कर सकें और अपनी खेती को लाभदायक बना सकें।



चित्र न-२ मुख्य अतिथि के हाथों पौध वितरण

सहायक निदेशक मत्स्य श्री अमरेश श्रीवास्तव ने विभाग द्वारा संचालित विभिन्न मछली पालन की योजनाओं के बारे में जानकारी दी और कृषकों को तालाब के किनारे वृक्षारोपण तथा जल संरक्षण की जानकारी देते हुए मछली पालन को प्रोत्साहित करने की बात कही। ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक श्री कमलेश पाण्डेय ने बताया कि वृक्षारोपण के महत्व को हम सभी को समझना होगा। इस अवसर पर क्षेत्रीय प्रबंधक इफको श्री शिवचंद्र शुक्ला ने वृक्षारोपण और जल प्रबंधन पर किसानों को कुछ महत्वपूर्ण जानकारी दी। मुख्य रूप से उन्होंने नीम के पौध लगाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया क्योंकि इसका प्रयोग हम नीम कोटेड यूरिया से लेकर जैविक कीटनाशक में उपयोग कर सकते हैं।

पशुचिकित्सका अधिकारी, मानपुर डा० डी० के० सिंह ने बताया कि वृक्ष पक्षियों, जानवरों और मनुष्य के लिए भोजन के रूप में फलों और पत्तियों को प्रदान करना। जैव विविधता को बनाए रखने में वृक्षों का महत्वपूर्ण योगदान है।



चित्र न-३ इफको के क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा केन्द्र के परिसर में वृक्षारोपण

पारादीप फास्टेस्ट लिमिटेड के राजीव सिंह ने घुलनशील उर्वरक के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि जैव उर्वरकों का प्रयोग करके हम मृदा स्वास्थ्य को बनाए रख सकते हैं तथा रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग की मात्रा को 10-15 प्रतिशत तक कम कर सकते हैं।

इंटरनेशनल पिनेसिया लिमिटेड प्रबंधक श्री रवि भदौरिया ने जैविक कीटनाशक के बारे में जानकारी दी। हेस्टर वायो साइस लिमिटेड के श्री जितेंद्र कुमार ने पशुओं के टीकाकरण और उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आगामी रबी की फसलों, मृदा प्रबंधन, फसल सुरक्षा एवं पशुपालन आदि के बारे में जानकारी कृषकों को दी गई। इस अवसर पर केन्द्र पर लगभग 450 कृषकों ने प्रतिभागता किया।



चित्र न -४ वृहद वृक्षारोपण अभियान अन्तर्गत नीम, पीपल, कदम, कुसुम, अमरुद, सहजन के पौधे किसानों को वितरित किये गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा पार्थेनियम घास जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा भा0कृ0अनु0प0-खरपतवार अनुसंधान निदेशालय, जबलपुर, मध्य प्रदेश के निर्देशानुसार ग्राम कटिया, सरवाहनपुर, पडरिया एवं वहिदापुर में पार्थेनियम घास जागरूकता सप्ताह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

भूमि की उर्वरा शक्ति में लगातार गिरावट आ रही है। अतः गाजरघास से जैविक खाद बनाकर हम पर्यावरण सुरक्षा करते हुए धनोपार्जन भी कर सकते हैं जिसे फसलों में डालकर पैदावार बढ़ाई जा सकती है। यह बहुत कम लागत में भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। गाजर घास का उपयोग अनेक प्रकार के कीटनाशक, जीवाणुनाशक और खरपतवार नाशक दवाइयों के निर्माण में किया जा सकता है। बायोगैस उत्पादन में भी इसको गोबर के साथ मिलाया जा सकता है।



चित्र न-9 केन्द्र के अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ० आनंद सिंह छात्र- छात्राओं को गाजर घास से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के प्रति जागरूक करते हुए



चित्र न-2 आस पास के क्षेत्रों में पार्थेनियम जागरूकता सप्ताह अंतर्गत रैली

गाजरघास या 'चटक चांदनी' एक घास है जो बड़े आक्रामक तरीके से फैलती है। यह एकवर्षीय शाकीय पौधा है जो हर तरह के वातावरण में तेजी से उगकर फसलों के साथ-साथ मनुष्य और पशुओं के लिए भी गंभीर समस्या बन रहा है। आज के समय में गाजरघास मनुष्य और पशुओं के लिए भी एक गंभीर समस्या है। इससे उनमें कई प्रकार के रोग हो जाते हैं। इस विनाशकारी खरपतवार को समय रहते नियंत्रण किया जाना चाहिए। इसकी पत्तियां असामान्य रूप से गाजर की पत्ती की तरह होती हैं। इसके फलों का रंग सफेद होता है। इससे खाद्यान्न फसल की पैदावार में लगभग 35-40 प्रतिशत तक की कमी आंकी गई है। इसके लगातार सर्पक में आने से मनुष्यों एवं पशुओं में डरमेटाइटिस, एकिजमा, एर्लजी, बुखार, दमा आदि की बीमारियां हो जाती हैं। पशुओं के लिए भी यह खतरनाक है। एवं दुधारू पशुओं के दूध में कडवाहट आने लगती है। पशुओं द्वारा अधिक मात्रा में इसे चर लेने से उनकी मृत्यु भी हो सकती है। सघन कृषि प्रणाली के चलते रासायनिक खाद एवं उर्वरकों के अत्यधिक प्रयोग से मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर होने वाले दुष्प्रभाव छिपे नहीं हैं।

इसकी रोकथाम के लिए वैधानिक, यांत्रिक, रासायनिक एवं जैविक विधियों का उपयोग किया जाता है। गैर कृषि क्षेत्रों में इसके नियंत्रण के लिए शाकनाशी रसायन एट्राजिन का प्रयोग फूल आने से पूर्व 1.50 किग्रा. सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर का प्रयोग फूल आने से पूर्व किया जा सकता है। इस पौधे का नियंत्रण जायगोग्रामा बीटल द्वारा जैविक रूप से भी किया जा सकता है।



उन्नत कृषि यंत्रों से महिला कृषकों को मिलेगी मदद

बीज बुवाई हेतु उन्नत कृषि यंत्र रोटेटरी नवीन डिबलर पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित

भारतीय कृषि में महिलाएँ मुख्य कार्यबल हैं। कृषि उत्पादन जो राष्ट्रीय उत्पादन के मुख्य अवयवों में से एक है, राष्ट्रीय आय में 28 प्रतिशत का योगदान करता है तथा कुल कार्यबल के 64 प्रतिशत भाग को रोजगार प्रदान करता है जिसमें 84 प्रतिशत आर्थिक रूप से सक्रिय महिलाएँ हैं। एक हैक्टयर क्षेत्रफल में एक महिला औसतन निराई के लिए 557 घण्टे और कटाई एवं मड़ाई के लिए 884 घण्टे काम करती है। अतः कृषक महिलाओं को अगर 'अन्नदात्री' की संज्ञा दी जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कृषि के प्रत्येक क्षेत्र में महिलाएँ श्रम की दृष्टि से पुरुषों के मुकाबले अग्रणी हैं जैसे अनाज उत्पादन क्रिया में उन्नत बीजों का चयन, हल के पीछे बीज और खाद डालना, चिड़ियों को खेत से उड़ाना, पौध तैयार करना, खरपतवार निकालना, कीटों का नाश करना, फसल की देखभाल करना, फसल काटना, बीज निकालना, बीज की सफाई, अनाज का भण्डारण एवं संरक्षण आदि कार्य। कृषक महिलाएँ तो भारतीय कृषि का मेरुदण्ड हैं। विश्व में खेती एवं कृषि यंत्रों के इतिहास में अंतर कर पाना असम्भव सा है। खेतों को तैयार करने, जोतने बोनने, फसल काटने आदि के लिए मनुष्य को आरंभ से ही उपकरणों की जरूरत रही है। आरंभ में वे सब औजार लकड़ी, पत्थर या हड्डी के रहे होंगे लेकिन धातु के आविष्कार के बाद पत्थर और हड्डी की जगह धातु ने ले ली और लकड़ी के हल में भी लोहे के फार लगने लगे। इसी प्रकार कुदाल, फावड़ा, खुरपी, हंसिया आदि दूसरे प्रकार के उपकरण भी बनाए और मानवशक्ति के साथ-साथ पशुशक्ति का उपयोग अधिक लाभदायक सिद्ध हुआ। समय के साथ मशीन व पावर चालित विभिन्न प्रकार के कृषि यंत्र विकसित हुए जिन्होंने कृषि कार्यों को सरल व आसान बनाने में हमारी असाधारण मदद करी, परंतु अगर हम देखें तो कृषि में महिलाएँ आज भी वहीं पारंपरिक यंत्रों का प्रयोग कर रही हैं जैसे खुरपी हंसिया, कुदाल इत्यादि। कृषि में महिलाओं के श्रम को कम कर उनकी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा विभिन्न कृषि यंत्रों पर जो कि विशेष रूप से महिलाओं के लिए तैयार किए गए हैं उनके प्रदर्शन आयोजित किये जाते रहे हैं। इसी कड़ी में खेतों में मोटे व मध्यम आकार के बीजों को बोने के लिए भारतीय कृषि अभियांत्रिकी संस्थान, भोपाल द्वारा विकसित

रोटेरी नवीन डिबलर का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन अरहर की एक समान दूरी पर व लाइन से बुवाई हेतु कृषक महिलाओं के बीच किया किया गया।



चित्र न-9 उन्नत कृषि यंत्रों का प्रदर्शन

रोटेटरी नवीन डिबलर के प्रयोग से बुवाई की कार्यक्षमता में 500 वर्गमीटर प्रति घण्टा की वृद्धि दर्ज की गई। बुवाई करते समय प्रोक्ता के रक्तचाप में, पारंपरिक विधि से बुवाई करने की तुलना में 7 प्रतिशत की कमी भी दर्ज किया गया। मांसपेशियों में दर्द की कमी के अनुभव को यदि देखें तो यह कमी 35 परसेंट पाई गई। रोटेरी नवीन डिबलर यंत्र एक समान दूरी पर व लाइन से बुवाई के लिए उपयुक्त है, इस यंत्र को प्रयोग कर हम मक्का, सोयाबीन, चना जैसी फसलों की बुवाई लाइन से कर सकते हैं। इस यंत्र के प्रयोग से खड़े होकर बुवाई की जाती है अतः कमर में होने वाले दर्द भी कम होता है तथा समय की भी बचत होती है।



पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से बकरियों में पी0पी0आर0 का टीकाकरण

कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से पशुपालकों को पशुओं देखभाल के बारे में जागरूक किया जा रहा है इसी क्रम में विकास खण्ड बिसवां के तेंदुआ व समसापुर ग्राम में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसमें पशुपालकों को संक्रामक रोग एवं आंतरिक/बाहिरी परजीवी के बारे में जानकारी दी गई।



चित्र न-9 पशु स्वास्थ्य शिविर अंतर्गत बकरियों का टीकाकरण पशुपालन का अधिकांश कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में होता है। जहाँ पशुओं के रखरखाव के लिए अधिकांश पशुपालकों के पास कोई निश्चित एवं स्वच्छ पशुशाला की व्यवस्था नहीं होती है। अधिकांश स्थान जहाँ पशु बांधे जाते हैं वहीं पर पशुओं द्वारा मलमूत्र विसर्जित किया जाता है एवं पशुओं का चारा भी उसी स्थान पर खिलाया जाता है। अतः इस प्रकार के अस्वस्थ वातावरण में पशुओं के चारे को संक्रमित होने तथा पशुओं में रोग फैलने की आशंका हमेशा बनी रहती है। संक्रामक रोगों में कुछ रोग ऐसे होते हैं जिनका कोई उपचार नहीं होता ऐसी स्थिति में "उपचार से बचाव अच्छा" की ही नीति उपयोगी रहती है। संक्रामक रोगों से पीड़ित पशुओं की चिकित्सा भी काफी मंहगी पड़ती है।

संक्रामक रोगों के रोकथाम के लिए सरकार की ओर से मुफ्त में या कुछ शुल्क लेकर पशुओं को टीका लगाने की व्यवस्था है। सभी पशुओं को टीका लगवा देना चाहिए। बकरियों में पी0पी0आर0 टीकाकरण (Peste Des Petitis Ruminanants) के संक्रमण से सबसे अधिक मृत्युहोती है, अतः बकरियों में पी0पी0आर0 टीकाकरण बहुत ही महत्वपूर्ण है इस महामारी से बचने के लिए प्रत्येक साल बरसात शुरू होने से पहले सभी बकरियों को जो 3 माह से अधिक उम्र की है पी0पी0आर0

टीका लगवा देने से बीमारी होने का भय नहीं होता है। बकरियों में पी0पी0आर0 का टीकाकरण महत्वपूर्ण है और सीतापुर जनपद में इस बीमारी के द्वारा अधिक संख्या में बकरियों की मृत्यु होती है। कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर द्वारा टीकाकरण शिविर में तेंदुआ व समसापुर ग्राम के 353 बकरियों का पी0पी0आर0 टीकाकरण किया गया व 48 बड़े जानवरों का उपचार किया गया।

पशुओं के स्वास्थ्य का चिंता भी जरूरी : डा. आनंद सिंह

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से पशुपालकों को किया गया जागरूक

संवाददाता : संजय

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से पशुपालकों को पशुओं की देखभाल के बारे में जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में विकास खण्ड के तेंदुआ व समसापुर ग्राम में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पशुपालकों को संक्रामक रोग एवं आंतरिक/बाहिरी परजीवी के बारे में जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से पशुपालकों को पशुओं की देखभाल के बारे में जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में विकास खण्ड के तेंदुआ व समसापुर ग्राम में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पशुपालकों को संक्रामक रोग एवं आंतरिक/बाहिरी परजीवी के बारे में जानकारी दी गई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, कटिया द्वारा पशु स्वास्थ्य शिविर के माध्यम से पशुपालकों को पशुओं की देखभाल के बारे में जागरूक किया जा रहा है। इसी क्रम में विकास खण्ड के तेंदुआ व समसापुर ग्राम में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें पशुपालकों को संक्रामक रोग एवं आंतरिक/बाहिरी परजीवी के बारे में जानकारी दी गई।

5 दिसम्बर विश्व मृदा दिवस के अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र-II, कटिया, सीतापुर जनपद के बिसवां विकास खण्ड के समसापुर गांव में निम्नलिखित कार्यों को आयोजित किया गया

- १-कृषक गोष्ठी २-जैविक कीटनाशी वितरण ३-जैविक उर्वरक वितरण ४- वर्मी कम्पोस्ट पिट वितरण 5-मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण

इसका उद्देश्य जनपद के लोगों में मिट्टी की उपयोगिता और उसके महत्व को लेकर जागरूकता पैदा करना है।



चित्र न-9 विश्व मृदा दिवस अंतर्गत कृषक गोष्ठी का आयोजन

इसी भावना के तहत केन्द्र के मृदा वैज्ञानिक श्री सचिन प्रताप तोमर ने कहा की उपजाऊ मिट्टी के लिए जरूरी है कि मिट्टी की जांच समय-समय पर होती रहे जिससे यह पता लग सके कि मिट्टी में किस मात्रा में किस प्रकार की खाद मिलानी चाहिए और कैसे मिट्टी की उर्वराशक्ति को बनाये रखी जा सकती है। उन्होंने किसानों से मिट्टी के नियमित परीक्षण का आह्वान करते हुए – 'स्वस्थ धरा, खेत हरा' का नारे को दोहराया। तथा राष्ट्रीय मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के अन्तर्गत सभी से अपने खेत की मिट्टी की जांच कराने का आवाहन किया जिससे मिट्टी का पी.एच मान, सल्फर, जिंक, नाइट्रोजन, लोहा, फास्फोरस, पोटैश और मैंगनीज के साथ साथ मिट्टी में मौजूद सभी तत्वों की स्थिति का अनुमान लगाया जा सके।



चित्र न-२ विश्व मृदा दिवस अंतर्गत जैविक कीटनाशी वितरण

केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ आनंद सिंह ने पशु स्वास्थ्य व उनके कृषि में योगदान पर किसान भाइयों के साथ वार्ता की तथा चयनित किसानों को वर्मी कम्पोस्ट पिट का वितरण किया साथ ही उन्होंने वर्मी कम्पोस्ट बनाने की विधि व पिट की देखभाल के बारे में भी बताया। प्रसार वैज्ञानिक श्री शैलेन्द्र सिंह ने किसान भाइयों से फसल की आवश्यकता के आधार पर सन्तुलित मात्रा में रासायनिक खाद डालने की सलाह दी इससे खेतों में अधिक और अंधाधुंध खाद डालने की मानसिकता पर रोक लगेगी जिससे न सिर्फ मिट्टी बल्कि पूरे पर्यावरण की गुणवत्ता को सुधारने में मदद मिल सकती है।



चित्र न-३ विश्व मृदा दिवस अंतर्गत वर्मी कम्पोस्ट पिट का निरीक्षण

सस्य वैज्ञानिक डॉ शिशिर कांत सिंह ने खेतों में जैव उर्वरकों को बढ़ावा दिए जाने के लिए कहा तथा जैव उर्वरकों के महत्व व उसके प्रयोग की बिधि के साथ साथ, पी एस बी कल्चर, राइजोबैक्टर, एजेटोबैक्टर आदि का वितरण भी किया।

दिसम्बर माह में किये जाने वाले कृषि कार्य

हेमन्त ऋतु के माह दिसम्बर यानी मार्गशीर्ष-पौष में तापक्रम काफी कम हो जाता है, इसलिए ठंड बढ़ जाती है। सापेक्ष आद्रता मध्यम एवं वायुगति शांत रहती है। इस माह औसतन अधिकतम एवं न्यूनतम तापक्रम क्रमशः 27 एवं 10.1 डिग्री सेन्टीग्रेड होता है। वायुगति 4.2 किमी प्रति घंटा के आस-पास होती है। कुछ स्थानों में कोहरा-पाला पड़ने की संभावना रहती है। इस माह गुरुघासीदास जयंती, ईद-ए-मिलाद एवं क्रिसमस डे जैसे महत्वपूर्ण त्योहार जोश और उमंग के साथ मनाये जाते हैं। फसलोत्पादन में इस माह नियत समय पर संपन्न किये जाने वाले आवश्यक कृषि कार्य प्रस्तुत हैं।

गेंहूँ: यदि गेंहूँ की बुवाई अब तक न कर सके हों तो इस महीने के पहले पखवाड़े तक अवश्य कर लें। इस समय की बुवाई के लिए पिछेती किस्मों का चयन करें। प्रति हक्टेयर 125 किलोग्राम बीज प्रयोग करें। बुवाई कतारों में 15-18 सेमी की दूरी पर करें। बुवाई से 30 दिन के अन्दर एक बार निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकाल दें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की रोकथाम के लिए 2,4-डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत 625 ग्राम प्रति हे. दवा को बुवाई के 35-40 दिन के अन्दर एकसार छिड़काव करें। गेंहूँ के प्रमुख खरपतवार गेंहूँसा और जंगली जई की रोकथाम के लिए आइसोप्रोटूरान की 0.75 सक्रिय तत्व 30-35 दिन में या अंकुरण पूर्व पैडीमेथालीन 1.0 किग्रा. सक्रिय तत्व 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

पूर्व में बोये गये गेंहूँ में नाइट्रोजन की शेष मात्रा दें तथा 15-20 दिन के अन्तराल से सिंचाई करते रहें। शरद ऋतु की वर्षा होने पर असिंचित गेंहूँ में नाइट्रोजन धारी उर्वरक सिफारिस अनुसार गेंहूँ की कतारों में दे।

जौ: जौ की पिछेती किस्मों की बुवाई करें। एक हैक्टेयर के लिए 100-110 किलो बीज लेकर बुवाई कतारों में 18-20 से. मी. की दूरी पर करें। उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के बाद ही करें। समय पर बोई गई फसल में बुवाई के 30-35 दिन बाद पानी लगायें।

तोरिया व सरसों: तोरिया दिसम्बर के अंतिम सप्ताह से जनवरी के प्रथम सप्ताह तक आमतौर पर पक जाती है। पकी हुई फसल की कटाई करें तथा समय पर बोई गई सरसों में दाने भरने की अवस्था में यदि वर्षा न हो तथा प्रथम पखवाड़े में सिंचाई न की हो तो सिंचाई करना चाहिए।

मटर: समय से बोई गई मटर में फूल आने से पहले एक हल्की सिंचाई कर देना चाहिए। तना छेदक की रोकथाम के लिये बुवाई से पूर्व 3 प्रतिशत कार्बोफ्यूथ्रान की 30 किग्रा. दवा प्रति हैक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला देना चाहिए। फसल में भभूतिया रोग के लक्षण दिखने पर घुलनशील गंधक या कार्बेन्डाजिम के दो छिड़काव करना चाहिए। गेरूआ रोग लगने पर मैकोजेब फंफूदनाशी का दो बार छिड़काव करें।

मसूर: मसूर की पछेती बुवाई इस माह भी कर सकते हैं। इसके लिए 50-60 किलो बीज प्रति हैक्टेयर डालें। बोने से पहले बीजोपचार करें। एक हैक्टेयर में 15 किग्रा. नाइट्रोजन तथा 40 किग्रा फॉस्फोरस प्रयोग करना चाहिए। बुवाई कूड़ों में 15-20 से.मी. दूरी पर करनी चाहिए। पूर्व में बोई गई फसल में फूल-फली बनते समय सिंचाई करें।

बरसीम, लूसर्न एवं जई: बुवाई के 45-50 दिन बाद इन चारा फसलों की प्रथम कटाई कर लेना चाहिए। इसके बाद 25-30 दिन के अंतराल से कटाई करते रहें। भूमि सतह से 5-7 से.मी. की ऊंचाई पर कटाई करें। कटाई के तुरन्त बाद सिंचाई कर देना चाहिए। गर्मी में पशुओं के लिए लूसर्न व बरसीम चारे का संरक्षण करें।

गन्ना: शरदकालीन गन्ने में नवम्बर के द्वितीय पखवाड़े में सिंचाई न की गई हो तो सिंचाई करके निराई-गुड़ाई करें। शरदकालीन गन्ने के साथ राई व तोरिया की सह फसली खेती में आवश्यकतानुसार सिंचाई करके निराई-गुड़ाई लाभप्रद होता है। गेहूँ के साथ सह-फसली खेती में बुवाई के 20-25 दिन बाद प्रथम सिंचाई करें। गेहूँ के लिये 30 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हैक्टेयर की दर से टापड्रेसिंग के रूप में प्रयोग करें। बसंतकालीन गन्ने की बुवाई हेतु खेत तैयार करें।

तीसी : खड़ी फसल में लीफ ब्लाइट तथा रतुआ रोग के नियंत्रण के लिए मैकोजेब 2 ग्राम/ली या 3 ग्राम मैनकोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।

आलू : रस चूसक कीट के नियंत्रण हेतु रोपाई के 45 दिन बाद फसल पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिली लीटर प्रति ली का घोल 2-3 बार 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। पिछेती आलू में दिसम्बर तथा जनवरी माह में अधिक टंड की आशंका होने पर फसल की सिंचाई कर देनी चाहिये। पाला का असर कम हो जाता है।

आम : आवश्यकतानुसार पौधों में नियमित सिंचाई करें। मधुआ कीट एवं पाउडरी मिल्ड्यू के नियंत्रण के लिए मंजर निकलने के समय कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम/ली या इमिडाक्लोप्रिड (0.05 प्रतिशत) का पहला एहतियाती छिड़काव करें।

लीची : मंजर आने के 30 दिन पहले पौधों पर जिंक सल्फेट (2 ग्रा./लीटर) के घोल का पहला एवं 15 दिन बाद दूसरा छिड़काव करने से मंजर एवं फूल अच्छे होते हैं।

पपीता : वृक्षारोपण के छः महीने के बाद प्रति पौधा उर्वरक देना चाहिए। नाइट्रोजन 150-200 ग्राम, फॉस्फोरस 200-250 ग्राम, पोटैसियम 100-150 ग्राम। तीनों उर्वरक 2-3 खुराक में वृक्ष लगाने से पहले फूल आने के समय तथा फल लगने के समय दे देना चाहिए।

अमरुद : फल-मक्खी के नियंत्रण के लिए फ्रूट पलाई ट्रेप 10 प्रति एकड़ लगाएं तथा 15 दिन बाद ल्योर बदलते रहे प्रभावित फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए तथा बगीचे में फल मक्खी के वयस्क नर को फंसाने के लिए फेरोमोन ट्रेप लगाने चाहिए।

आँवला : तुड़ाई उपरांत फलों को कार्बेन्डाजिम से उपचारित करके भण्डारित करने से रोग की रोकथाम की जा सकती है।

पशुपालन : पशु को आहार देने के कुछ मूल नियम: पशु का आहार संतुलित एवं नियंत्रित हो। उसे दिन में दो बार 8-10 घंटे के अंतराल पर चारा पानी देना चाहिए। इससे पाचन क्रिया ठीक रहती है एवं बीच में जुगाली करने का समय भी मिल जाता है। पशु का आहार सस्ता, साफ, स्वादिष्ट एवं पाचक हो। चारे में 1/3 भाग हरा चारा एवं 2/3 भाग सूखा चारा होना चाहिए। पशु को जो आहार दिया जाए उसमें विभिन्न प्रकार के चारे-दाने मिले हों। चारे में सूखा एवं सख्त डंठल नहीं हो बल्कि ये भली भांति काटा हुआ एवं मुलायम होना चाहिए। इसी प्रकार जौ, चना, मटर, मक्का इत्यादि दली हुई हो तथा इसे पक्का कर या भिंगो कर एवं फुला कर देना चाहिए। दाने को अचानक नहीं बदलना चाहिए बल्कि इसे धीरे-धीरे एवं थोड़ा-थोड़ा कर बदलना चाहिए। पशु को उसकी आवश्यकतानुसार ही आहार देना चाहिए। कम या ज्यादा नहीं। नांद एकदम साफ होनी चाहिए, नया चारा डालने से पूर्व पहले का जूठन साफ कर लेना चाहिए। गायों को 2-2.5 किलोग्राम शुष्क पदार्थ एवं भैंसों को 3.0 किलोग्राम प्रति 100 किलोग्राम वजन भार के हिसाब से देना चाहिए।

पत्रिका में विज्ञापन के लिए संपर्क करें

शैलेन्द्र कुमार सिंह (वैज्ञानिक कृषि प्रसार/संपादक)

दूरभाष नंबर 07376905268

2020 Calendar - India

Courtesy of WinCalenda

One page full-year calendar.

| January 2020 | | | | | | |
|--------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

| February 2020 | | | | | | |
|---------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | |

| March 2020 | | | | | | |
|------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | 31 | | | | | |

| April 2020 | | | | | | |
|------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | | | |

| May 2020 | | | | | | |
|----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | | 1 | 2 | 3 |
| 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 |
| 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 |
| 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 |

| June 2020 | | | | | | |
|-----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 |
| 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 |
| 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 |
| 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 |
| 29 | 30 | | | | | |

| July 2020 | | | | | | |
|-----------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 |
| 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 |
| 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 |
| 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | | |

| August 2020 | | | | | | |
|-------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | | | 1 | 2 |
| 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
| 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 |
| 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 |
| 31 | | | | | | |

| September 2020 | | | | | | |
|----------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | | | | |

| October 2020 | | | | | | |
|--------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | 1 | 2 | 3 | 4 |
| 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 |
| 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 |
| 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | |

| November 2020 | | | | | | |
|---------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | | | | | | 1 |
| 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 |
| 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 |
| 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 |
| 30 | | | | | | |

| December 2020 | | | | | | |
|---------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| Mon | Tue | Wed | Thu | Fri | Sat | Sun |
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 |
| 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 |
| 28 | 29 | 30 | 31 | | | |

| Date | Holiday |
|--------|---|
| 26 Jan | Republic Day (गणतंत्र दिवस) |
| 21 Feb | Maha Shivaratri/Shivaratri (महा शिवरात्रि) |
| 9 Mar | Holika Dahan (होलिका दहन) |
| 10 Mar | Holi (होली) |
| 1 Apr | Annual Closing of Bank Accounts |
| 6 Apr | Mahavir Jayanti (महावीर जयंती) |
| 10 Apr | Good Friday (गुड फ्राइडे) |
| 14 Apr | Ambedkar Jayanti (अम्बेडकर जयंती) |
| 7 May | Buddha Purnima/Vesak (बुद्ध पूर्णिमा) |
| 23 May | Ramzan Id/Eid-ul-Fitar (रमजान ईद/ईद उल फितर) |
| 31 Jul | Bakr Id/Eid ul-Adha (बकर-ईद) |
| 11 Aug | Janmashtami (जन्माष्टमी) |
| 15 Aug | Independence Day (स्वतंत्रता दिवस) |
| 22 Aug | Ganesh Chaturthi/Vinayaka Chaturthi (गणेश चतुर्थी) |
| 29 Aug | Muharram/Ashura (मुहर्म्म) |
| 2 Oct | Mahatma Gandhi Jayanti (महात्मा गांधी जयंती) |
| 25 Oct | Dussehra / Vijaya Dashami (दशहरा) |
| 28 Oct | Milad un-Nabi/Id-e-Milad (मिलाद उन नबी/ ईद ए मिलाद) |

Sh Narendra Singh Tomar (Union Minister of Agriculture & Farmers Welfare) 23782691, 23383370

Dr Trilochan Mohapatra Secretary (DARE) & Director General, ICAR 0-11-23382629, 23386711

Prof (Dr) AK Srivastava Chairman, ASRB 25843295, 25841272

Dr Ashok Kumar Singh DDG (Agril Extn) 25843277, 25842968 (F)

Dr VP Chahal ADG (Ag Extn) 25841536, 25842968 (F), 09968722475

Dr Randhir Singh ADG (Agril Extn) 25841287, 25842968(F)

Shri Soraaj Singh, Director of Agriculture, Uttar Pradesh 08429031506

Dr. Bijendra Singh Director General-UPCAR, Lucknow 522-2721626

Dr AD Pathak Director- IISR, Lucknow 0522-2480726, 2480738(F) 9450373565

Dr. Atar Singh Director (I/C), ATARI, Kanpur, Uttar Pradesh - 07376141524

For online version of this Calendar see: